SJIF 2016 : 4.44
ISSN: 2348-3083
UGC APPROVED SR. NO. 48612
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

आधुनिक समाज में संस्कृत की उपादेयता एव प्रासंगिकता

पल्लवी सिंह, Ph. D.

वरिष्ठ प्रवक्ता (संस्कृत), के.आर.महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा

Scholarly Research Journal's **is licensed Based on a work at** www.srjis.com

साहित्य शब्द और अर्थ के मुञ्जल सामञ्जस्य का सूचक है। सहितयोः भावः साहित्यम्।। महाकवि भर्तृहरिः ने संगीत और साहित्य से विहीन मनुष्य को पशु कहा[1] तब उनका तात्पर्य साहित्य के उन कोमल काव्यों से है। विधाविहीन मनुष्य एक अंधे के समान है, ज्ञान से मनुष्य के अंतःचक्षु खुल जाते हैं, ज्ञान वस्तुतः मनुष्य का तीसरा नेत्र है।

संस्कृत साहित्य का इतिहास पूर्वोक्त सिद्धान्त का पूर्ण समर्थक है। संस्कृत साहित्य भारतीय समाज के भव्य विचारों का रुचिर दर्पण है। भारतवर्ष में सांसारिक जीवन के उपकरणों का सौलभ्य होने के कारण भारतीय समाज जीवन–संग्राम के विकट संघर्ष से अपने को पृथक रखकर आनन्द की अनुभूति को, वास्तव शाश्वत आनन्द की उपलब्धि को, अपना लक्ष्य मानता है। यह साहित्य विषम परिस्थितियों में भी सच्चिदानन्द की खोज में लगा है। इसलिए संस्कृत काव्य की आत्मा रस है। इस का उन्मीलन श्रोता तथा पाठक के हृदय में आनन्द का उन्मेष ही काव्य का अन्तिम लक्ष्य है। आश्रमों की स्थिति ग्राहस्थाश्रम के ऊपर ही निर्भर है। अतः भारत वर्ष का प्रवृत्ति मूलक समाज गृहस्थ धर्म को पूर्ण महत्व प्रदान करता है और इसीलिए संस्कृत साहित्य में गृहस्थ धर्म का चित्रण सांगोपांग पूर्ण तथा हृदयावर्जक रुप में उपलब्ध होता है। महाकाव्य वाल्मीकीय रामायण गृहस्थ धर्म की धुरी पर घूमता है। साहित्य समाज का अन्योनाश्रय सम्बन्ध रहा है। समाज की रुप रेखा उसकी सोच उसका उत्थान–पतन आदर्श उसकी साहित्य विद्या की धरोहर है।

कवि समाज को विशुद्ध वातावरण में विचरण करता था उसका हृदय सहानुभूति की भावना से नितान्त स्निग्ध था। वह अपने काव्यों में जनता के हृदय की बातों का प्रवृत्तियों का जितना वर्णन करता था उतना ही वह अपने देश की संस्कृति में भी मूल्यवान आध्यात्मिक विचारों को अपने काव्यों में अंकित करता था। संस्कृत साहित्य ने बहुविध देशों की मूक जनता को भावों के प्रकरण का माध्यम प्रदान किया

ह्रदय को सरस बनाने के लिए कोमल भावमय कविता खिलायी और समाज व्यवस्था के नियमों को बतलाकर उन्हें बर्बरता से मुक्त कर सभ्य और शिष्ट बनाया।

संस्कृत साहित्य का क्षेत्र व्यापक रहा है। वह सर्वांगीण है सब अंगों से परिपूर्ण है। मानव जीवन के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष संस्कृत साहित्य में इन चारों पुरुषार्थों का विवेचन बड़े विस्तार तथा विचार के साथ किया गया है। प्राचीन ग्रन्थकारों ने भौतिक जगत के सहानुभूत अर्थशास्त्र और कामशास्त्र के वर्णन की ओर भी दृष्टि फेरी है। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' तो प्रसिद्ध ही है। एक ग्रन्थ के ही अध्ययन मात्र से राजनीति शास्त्र के सर्वांगीण परिचय प्राप्त कर सकते हैं। उसके अलावा एक विशाल साहित्य अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में है, 'कामशास्त्र' भी हमारी उपेक्षा का विषय नहीं रहा है वात्स्यायन मुनि ने कामसूत्र में गृहस्थ जीवन के लिए उपादेय साधनों का वर्णन बड़े अच्छे ढंग से किया है। विज्ञान, ज्योतिष, वैधक, स्थापत्य, पशु–पक्षी सम्बन्धी लक्षण ग्रन्थ संस्कृत साहित्य में प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। यहॉ श्रेय शास्त्र और प्रेय शास्त्र उभय शास्त्रों के अध्ययन की ओर प्राचीन काल से विद्वानों की प्रवृत्ति रही है।

धार्मिक दृष्टि :– जो व्यक्ति आर्यों के मूल धर्म को जानना चाहता है उसे वेदों का अध्यय करना चाहिए क्योंकि वेदोऽखिलोधर्ममूलम्। [2] वेदधर्मों का मूलाधार है। वेदों के अनुशीलन का ही फल है कि पश्चिमी विद्वानों में तुलनात्मक पुराण शास्त्र (Comparative Mythology) जैसे नवीन शास्त्र की ढूँढ़ निकाला है। इस शास्त्र से पता चलता है कि प्राचीन काल में देवताओं के सम्बन्ध में लोगों में क्या विचार थे और किन–किन उपासना के प्रकारों से वे उनकी कृपा प्राप्त करने में सफल होते थे। आस्तिकता, सर्वशक्तिशाली भगवान की जागरुक सत्ता में अटूट विश्वास इस भगवत शक्ति के प्राचुर्य ने संस्कृत में एक विशाल साहित्य को जन्म दिया जो स्तोत्र साहित्य के नाम से अभिहित है। ''दैवीशतक'' चण्डीशतक इसके उदाहरण है। ह्रदय की दीनता, आत्मनिवेदन अपराध स्वीकार आदि कोमल भावों की विशाल राशि प्रस्तुत करने वाला यह मनोवैज्ञानिक साहित्य संसार में बेजोड़ है।

दार्शनिक तत्त्व :– संस्कृत नाट्को का सुखान्त रुप भारतीय दार्शनिक विषय से परिचय पाने का साधन है। भारतीय तत्वज्ञान नैराश्य के भीतर से आशा का, विपत्ति के भीतर से सम्पत्ति का तथा दुःख के भीतर से सुख का उद्‌गम अवश्य प्रभावी मानती है। संसार का पर्यवसान दुःख में नहीं है। यह जीवन व्यक्तित्व के विकास में स्वतः मूल्य और महत्व रखता है। जो साहित्य आशावाद की जननी हो दुःख में भी सुख की बात करे वहीं तो सम्प्रति समाज की जरुरत है। हर तरफ से कुष्ठाओं से ग्रसित व्यक्ति यदि कुछ समय भी इस प्रेरणा दायक साहित्य के सानिध्य में बितायेगा वह ही जीवन के मूल तत्व को प्राप्त कर सकता है। जीवन जीने की कला, दर्शन की प्रेरणा साहित्य से बढ़कर प्रेरणादायक तत्व और कौन हो सकता है। भारतीय दर्शन साहित्य संस्कृत साहित्य की धरोहर है।

''यावत् जीवेत सुखम् जीवेत .... ऋणं कृत्वा घीतं पीबेत्''

रसात्मक सिद्धान्त का पोषक है नास्तिक एवं आस्तिक दर्शन दोनों वेद सम्मत ही है। दोनों ही मानव जीवन को अमूल्य एवं प्रयोजनमय मानते हैं। पुरुष के चार लक्ष्य हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, अर्थ और मोक्ष क्षणिक सुख पर धर्म शाश्वत सुख है, जो मोक्ष का साधन एवं परम सुखकारक है। इन्द्रिय निग्रह विविध षट् दोषों का परित्याग कर वैचारिक और व्यावहारिक शक्ति का लोकहित कार्यों में उपयोग ही मनुष्य को परमानन्द देता है। धर्म के स्रोत वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, रामायण, गीता है। संसार में मनुष्य को सम्पूर्ण वस्तु का त्याग कर प्रयोग करना चाहिए, धन के प्रति मोहाशक्ति नहीं हो। [3] सत्य की विजय होती है। असत्य की नहीं। [4] भगवान श्रीकृष्ण के अनुसार आत्मा नित्य शाश्वत पुरातण अजन्मा अछेद्य अशोष्य और सर्वव्यापक है, शरीर नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता। यदि इसके गूढ़ तत्व को माने तो वस्तुतः व्यक्ति को आत्मिक गुणों, दया, वीरता, सदाचार उदारता, सह्रदयता, सहिष्णुता, कुपा आदि सदगुण ही शरीर नाशोपरान्त जीवित रहते है आत्मिक गुणों का वास स्थान वस्तुतः आत्मा ही है।

वैज्ञानिक दृष्टि से आत्मा संरक्षणीय ऊर्जा है जिस प्रकार ऊर्जा का नाश नहीं होता वरन दूसरी ऊर्जा में परिवर्तित होती है। इसे LAW OF CONSERVATION OF ENERGY कहते हैं।[5] अतः ऊर्जा का परिवर्त्तन होता है, नाश नहीं।

संस्कृत साहित्य में विश्वबन्धुत्व की कल्पना एवं वैश्वीकरण का आधार है। मानव मात्र के कल्याण की भावना से अग्रसरित है यह साहित्य संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठ उदारता का आश्रय लेकर विश्वबंधुत्व की स्थापना करता है। अन्यान्य जनपदीय भाषाओं और बोलियों की उत्पत्ति संस्कृत से हुई। यह भाषा के शतम् परिवार की जननी है।

आयुर्वेद और वैकल्पिक चिकित्सा के क्षेत्र में इस साहित्य का योगदान नकारा नहीं जा सकता। ''जीवेम् शरदः शतम्''[6] शतायुष्मता हेतु प्रार्थना एवं पुरुषार्थ चतुष्टय कामना हेतु दीर्घायु होना आवश्यक है। रोजमर्या के प्रयोग में आनेवाला सामान्य च्यवनप्राश, अश्विन, देवताओं के जो चिकित्सा के देव हैं–द्वारा च्यवनऋषि में चिरयौवन देने के वरदान स्वरुप पैदा हुआ। वास्तु, रंग, विद्वान सब संस्कृत साहित्य के ही धरोहर है। आज कम्प्यूटर के युग में सर्वाधिक तर्कसंगत भाषा होने के कारण कम्प्यूटर द्वारा प्रयुक्त भाषा के रुप में सर्वाधिक प्रयुक्त भाषा है।

संस्कृत भाषा में निबद्ध व्याकरण ग्रन्थ पाणिनीय व्याकरण के सम्बन्ध में प्रो0 मोनियर विलियम्स की मान्यता है कि – यह मानव मस्तिष्क की प्रतिमा को ऐसा बेजोड़ विस्मयजनक निदर्शन है जिसे–किसी देश ने अब तक प्रस्तुत नहीं किया। संस्कृत सम्+कृ परिष्कृत, संस्कार किया हुआ। मैक्समूलर की दृष्टि से पाणिनी संसार का सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण हैं। संस्कृत के ज्ञानार्जन से ही पाश्चात्य मनीषियों ने भाषा विज्ञान औ पुरातत्व जैसी विद्याओं का अध्यय द्वारा खोला है। केन्टुम् और शतम् दो

भागों में विभक्त सम्पूर्ण भाषा विज्ञान में शतम परिवार का जनक वेद ही है और जिन्द अवेस्ता को केन्टुम् परिवार का जनक कहते हैं।[7]

जिस भगवत–गीता ने लोकमान्य को परमात्मा का पाठ महात्मा गाँधी को सत्य और अहिंसा द्वारा शत्रुओं को जीतने का अमरघोष बताया वह आज समाज की जरुरत है।[8] आध्यात्मिक उत्कर्ष एवं भागदौड़ भरी जिन्दगी में शान्ति और मनन के आश्रम में आना चाहता है। कर्म प्रधान है, यह जीवन का मूल आधार है। ''पाणी'' की महत्व से सर्वदा परिव्याप्त आज के आतंकवादी–युग के लिए एक अक्षुण्ण राम–वाण है। अपने पराये की गणना तो लघुचित वाले प्राणी करते हैं उदार चरित्र वाले जनों की दृष्टि में तो समस्त वसुधा ही एक कुटुम्ब है।[9] यातायात के इस युग में हम आवश्यकतावश पाशबाद्ध हैं वैश्वीकरण के युग में हम बाध्य है दूसरे के कल्याणार्थ सोचने को परन्तु ऐसी सविंधाओं से विरहित प्राचीनकाल में भारत के निवासी विश्व बन्धुत्व की भावना मे विश्वास ही वरन् उसे दैनन्दिन जीवन में प्रयोग करते थे।

संस्कृत काव्यों एवं रुपक में विश्वबन्धुत्व की भावना सर्वत्र प्रस्फुल्लित होती है। धार्मिक अनुष्ठान की समाप्ति पर साधक पुरुष अपना आदर्श इस प्रसिद्ध श्लोक द्वारा करता है जिसमें सभी के सुख, निःरोग कल्याण एवं दुःख से दूर रहने की कामना की गयी है।[10]

संस्कृत देववाणी है भूमि वलय पर कोई भी भाषा सबसे प्राचीन होने की अधिकारिणी है तो वह है संस्कृत भाषा। प्राचीनतम ग्रन्थ और हमारे धर्म सर्वस्व शक्तिमान वेदभागवत इसी गौरवमयी ग्रीर्वाण – वाणी में आराधनीय ऋषियों के द्वारा परमात्मा की आन्तरिक प्रेरणा में दृष्ट हुए हैं। पाणि लाभ से बढ़कर वरदान वेदव्यास ने कुछ और नहीं माना। हाथ रहते हाथ पर हाथ रख बैठे रहना अकर्मण्यता है।11

कुण्ठा मानसिक विक्षिप्तता से ग्रसित समाज, जहाँ नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है वहाँ अध्यात्म की तरफ उन्मुख करना, उच्च आदर्शों की पुनः स्थापना एक अमृतमय पवित्र साहित्य द्वारा ही संभव है। सहृदय मानव ही साहित्य के सूक्ष्मति सूक्ष्म तत्व का अनवेषण कर उस हृदयांगम कर जीवन को अंग बनाता है, आज सहृदय की जरुरत है आतंकित करने वाले भावों की नहीं वरन बन्धुत्व की जरुरत है। वैश्वीकरण के युग में मातृभूमि के मूल को जानने, सांस्कृतिक धरोहर के दोहन को रोकने की आवश्यकता है। यह तभी सम्भव है जब मातृभूमि माँ सदृश हो। 12 व्यक्ति स्वार्थ से ऊपर उठ सम्पूर्ण विश्व को एक कटुम्ब समझें।13

संस्कृत भाषा साहित्य अतिशय महत्वपूर्ण और पठनीय है यह विश्वजननी सम्मान की हेतु है, गौरवमयी अतीत की स्मारिका है, दिशा भ्रष्ट मानव की मार्गदर्शक है भारतीय शब्द दैन्य की पूर्ति करने वाली अक्षय निधि है, राष्ट्र की भावात्मक एकता का साधन है। भारतीय भाषाओं यह भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की कुँजी है, स्वर्ग को पृथ्वी पर ला खड़ा करने की शक्ति से सम्पन्न है। अतः आज भी समाज ऐसे ही साहित्य की आवश्यकता है जो असत् से सत् की ओर अन्धकार से प्रकाश की आरे मर्त्त्य से

अमरत्व की ओंर ले जायें और सदा ही उद्बोधित कर अग्रसरित होने की प्रेरणा दें। अतएव संस्कृत साहित्य वर्तमान समाज की आवश्यकता जरुरत एवं धरोहर है।

1. विद्या विहीनः पशुः – मर्तृहरिः नीतिशतक।
2. वेदोऽखिल : धर्ममूलम् – मनुस्मृतिः
3. ईशावस्यमिदं सर्वम् जगत्याजगत्
   यत्किंचंतेन त्यक्तेन मुजीथा मा गृधः
   कस्यस्विदुनम् ।। इशवसेपनिषद (प्रथम श्लोक)
4. Enstien theory law of Conservation of Energy = $E = mc^2$
5. जीवेम् शरदः शतम् पश्येम् शरदः शतम्। –वेद।
6. भाषा विज्ञान–भोलानाथ त्रिपाठी
7. कर्मेण्य वाधिकास्ते माफलेषु कदाचन् श्रीमदभागवत गीता – 2 अध्याय
8. विश्वानि देव स्नवितुदुरितानि परासुव
   मद मंत्र तन्त्र आसुव – यजुर्वेद
9. अयं निजो परोवृति गणना लघुचेतसाम
   उदार चरितानां तु वसुदैव कुटुम्बकम्।। पंचतंत्र
10. सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वेसन्तु निरामयाः
    सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत।
11. न पाणि लाभाधिको लाभः कश्चनविधते–महाभारत
12. जननी जन्मभूमि स्वर्गात् अपि गरियसी– रामायण
13. वसुधैव कुटुम्बकम् – पंचतत्र
14. असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योर्तिगमय
    मृर्त्योमा अमृतमगयम ओम् शान्ति –3 उपनिषद
15. उतिष्ठत जाग्रत वरान्निबोध्य –कठोपनिषद।